

(अस. सिद्धान्त) कोबर का भू-सन्नति पर्वत निर्माणकारी सिद्धांत
 V.S.P. College Kober's Geosynclinal theory

यह विचार जर्मन भूगोलवेत्ता कोबर द्वारा दिया गया था।
 उन्होंने संकुचन के आधार पर भू-पर्वतों की उत्पत्ति की
 व्याख्या किया जिसमें विशेष रूप से मोड़दार पर्वतों की
 उत्पत्ति पर प्रकाश डाला।

कोबर महाद्वीपों के पृथ्वी पर भू-सन्नतियों की
 संकल्पना किया। भू-सन्नतियाँ लम्बे, झिल्ले और संकर स्पाट
 होते हैं, जिन्हें ओरोजेन कहा जाता है।

भू-सन्नतियाँ कई प्रकार की होती हैं। -

1. Monocline Geosyncline (एक भू-सन्नति)
2. Poly Geosyncline (बहु भू-सन्नति)

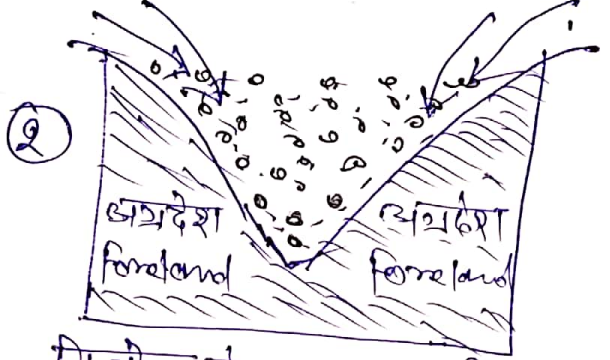
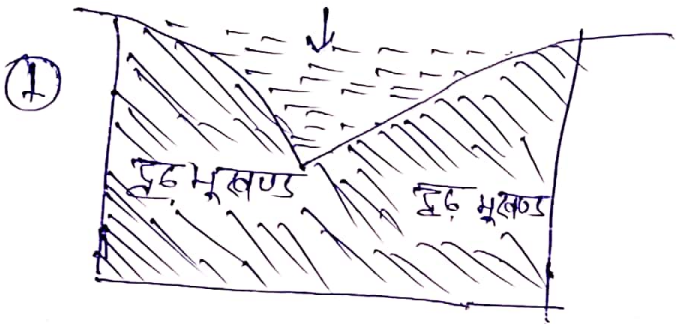
भू-सन्नतियों में नदियों द्वारा लाया गया अवसाद
 जमा होता जाता है। जिसके कारण भू-सन्नति की तलहटी
 गहरी जाती है। जिसके फलस्वरूप होने वाले तलहटी के खण्ड
 भू-सन्नति की तरफ ढलते हैं। इन्हें अग्रभाग
 (Foreland) कहा जाता है।

अग्रभाग (Foreland) - जो भू-सन्नति की तरफ
 झिसका है उसे अग्रभाग (Foreland) कहते हैं। जर्मन भाषा
 में इसे ओरोजेन कहते हैं। जिसके दबाव से भू-सन्नति का
 मलवा उपर उठता है और मोड़दार पर्वत आखिर में आता है।

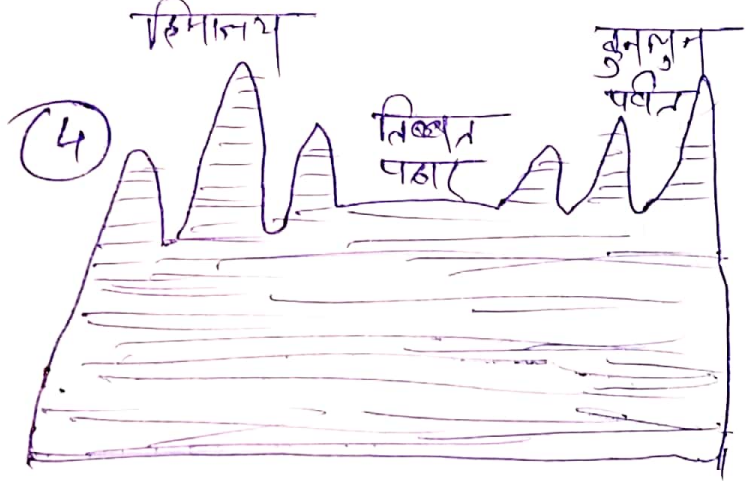
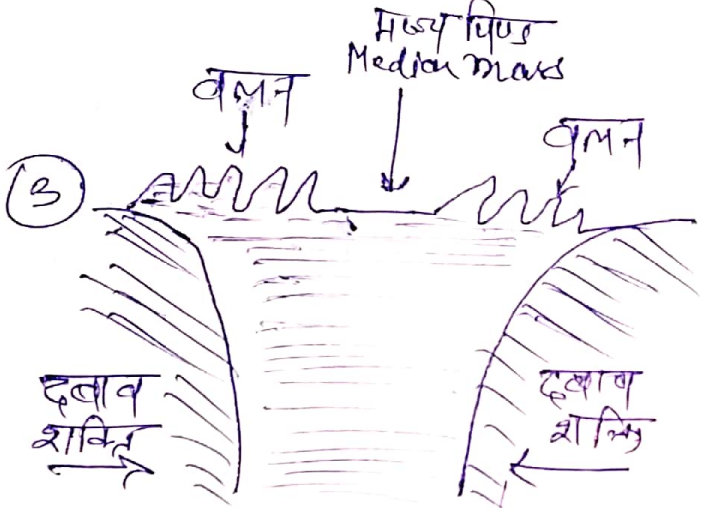
भू-सन्नतियों के मध्य में अभी-अभी कड़े भूखण्ड
 भी मिलते हैं जिन्हें मध्य पिंड (Middle mass) कहा जाता है।
 इसे जर्मन भाषा में "Rindkegel" कहते हैं। इसका दूसरा
 नाम "श्वेडिनर्क" है। उदाहरण - तिब्बत का पहाड़।

बड़ा पठार के दू. में हिमालय और उत्तर में क्यूनलुन
 का पठार है। कलाप के कारण मोड़ला पर्वत भुव
 जाते हैं जिससे 'श्यान वलन' (Recomberd fold) का
 निर्माण होता है। इसके फलस्वरूप पहाड़ का उपरी
 भाग टूट कर टूट चला जाता है, जिसे शिवा शकण
 (Nappe) कहा जाता है। डॉर कोबर ने पृथ्वी पर
 6 बार पर्वतों की उत्पत्ति की संख्या की जबकि डाल
 के प्रमाण 4 बार पर्वतों की उत्पत्ति की व्याख्या करते हैं।
कोबर का भू-समसिद्धि

भू-समसिद्धि



मिथोप एवं दक्षिण की अवस्था



पर्वत निर्माण की प्रक्रिया

आलोचना -:

- ① संकुचन बल के कारण अग्रभाग आगे नहीं बढ़ सका
- ② दोनों किनारे एक ढर से नहीं बढ़ते हैं. इसलिए दोनों को अग्रभाग नहीं कहना चाहिए।
- ③ कुलम उत्तर और दक्षिण ध्रुवों पर पर्वतों की उत्पत्ति के लिये प्रकाश नहीं होता।
- ④ कुलम पर्वत उत्पत्ति की 6 अवस्था को बतलाया जा सके नहीं है।

सुझाव :-

क्या आलोचनाओं के बावजूद भी इस 'संकुचन विद्वान' आज भी महत्वपूर्ण है जिसे वेगनर और प्लेट-टेक्टोनिक विद्वान ने अपना आधार पर्वतों की उत्पत्ति की व्याख्या के लिए अपनाया।